International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

आठवें दशक के हिंदी नाटकों के बिंब विधान का अनुशीलन

डॉ. शिवदयाल पटेल, सहायक प्राध्यापक हिन्दी,

शासकीय महाविद्यालय, बरपाली, जिला-कोरबा, (छ.ग) भारत

"बिम्ब" शब्द वस्तुतः अंग्रेजी के "इमेज़" शब्द का रूपान्तर है, जिसका अर्थ मानसिक चित्र या विचार है। "इमेज़" को कल्पना या स्मृति में निर्मित स्वरूप की प्रतिकृति माना गया है। लेकिन काव्य-बिम्ब अथवा साहित्यिक बिम्ब, मनोवैज्ञानिक बिम्ब से भिन्न होते हैं। मनोवैज्ञानिक बिम्बों का मानवीय भावनाओं के साथ सीधा सम्बन्ध नहीं होता, लेकिन साहित्यिक बिम्ब अथवा काव्य- बिम्ब मानवीय संबंधों का प्रकाशन करते हैं तथा उनका प्रयोग जीवन के संदर्भ में किया जाता है। मनुष्य की मूल प्रवृत्ति है कि वह बिम्बों को ग्रहण करे तथा उनका प्रयोग करे। इसीलिए मनुष्य काल्पनिक चित्रों का सर्जन करता है। इस प्रकार बिम्ब सचेत ऐन्द्रिय शब्द-चित्र है, जो प्रमाता के मन में, बाह्य जगत् के सन्निकर्ष से, स्मृति के द्वारा निर्मित होते हैं।

बिम्ब नाटक का प्रमुख विधायक तत्व है। नाटक की बहुत-कुछ सफलता, बिम्बों की उपयुक्त योजना पर निर्भर होती है। बिम्ब नाटककार के यथार्थ-बोध और समसामयिक चेतना के संवाहक होते हैं। नाटक के प्रत्येक दृश्य का अपना बिम्ब होता है। बिम्ब की सहायता से रचनाकार किसी वस्तु अथवा संवेद्य अनुभव को, कल्पना के संयोग से नवीन रूप प्रदान करता है। नाटक, मंचीय विधा होने के कारण उसके बिम्बों का, मंच पर सफलतापूर्वक रूपायित होना आवश्यक है। जिस नाटक का शिल्प-बन्ध और कथ्य कमजोर होता है, उसके

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

नाट्य बिम्ब दर्शकों के मन-मस्तिष्क को प्रभावित नहीं कर पाते। नाटक को संवेद्य-सक्षम एवं विचार प्रवण बनाने में वही नाटककार सफल होता है, जो कल्पना और संकेत-सूचक भाषा के साथ रंगमंच को प्रकाश, ध्वनि और रूपात्मक बिम्बों से सुसज्जित करने में उर्वर मस्तिष्क हो । नाटक को अधिकाधिक बिम्बों से सम्पृक्त होना चाहिए, क्योंकि

बिम्ब ही नाटक के भावों को अधिक दृश्यमान और विचारों को अधिक सम्प्रेषणीय बनाते हैं ।

बिम्ब के आठ विधायक तत्व माने गये हैं-अनुभूति की सघनता, कल्पना की उन्मुक्त उड़ान, भावों को तीव्रता के साथ प्रस्तुत करने की शक्ति, अभिव्यक्ति की सामर्थ्य, वासना, ऐन्द्रियता, उर्वरता एवं औचित्य । इन तत्वों से पुष्ट होकर ही बिम्ब सार्थक बनता है। साहित्य का बिम्ब की दृष्टि से अध्ययन करते समय, बिम्ब का व्यापक फलक सामने आता है। अतः अध्ययन की सुविधा के लिए, बिम्ब का वर्गीकरण करना आवश्यक हो जाता है । बिम्ब का वर्गीकरण प्रायः विधायक तत्वों के आधार पर किया जाता है। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में नाट्य बिम्बों का चार रूपों में वर्गीकरण कर, अध्ययन किया गया है- इन्द्रिय आश्रित बिम्ब (दृश्य, श्रव्य, घ्रातव्य, आस्वाद्य और स्पर्श्य), पारम्परिक बिम्ब (आद्य, स्वप्न, पौराणिक और ऐतिहासिक), अभिव्यक्ति केन्द्रित बिम्ब (मंच और वेश-भूषा से सम्बंधित, अभिनय आधारित, भाषा केन्द्रित, अलंकार आश्रित तथा कहावतों-मुहावरों पर आधारित)

और संश्लिष्ट बिम्ब । इन अध्ययनों में यह देखने का प्रयास किया गया है कि नाटककार अपनी मंचीय सीमाओं और सामाजिक परिवेश में कहाँ तक बिम्बों की सार्थक परिकल्पना कर सका है और वे बिम्ब कितने सार्थक और बहुआयामी हैं। आठवें दशक के हिन्दी-नाटकों में मानव-मन की जटिलता का विश्लेषण विशेष रूप में किया गया है, अतः अमूर्त भावों को मूर्त

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

रूप प्रदान करने का माध्यम बिम्ब ही है। बिम्ब एक दर्पण की भाँति है, जहाँ संबंधित सत्य जीवन्त रूप में प्रतिभाषित होता है।

नाटक में दृश्यत्व के कारण दृश्य बिम्बों का प्राधान्य रहता है। यही नाटक के केन्द्रीय बिम्ब हैं। नाटक के समस्त पात्र और उनके क्रिया-कलापों के अनुबिम्ब, इसी प्रमुख बिम्ब की परिक्रमा करते दिखाई देते हैं। दृश्य बिम्ब आकारवान् होते हैं, इसीलिए इनमें कथ्य के आयाम अधिक मूर्त होते हैं। दृश्य बिम्बों के ग्रहण की प्रक्रिया, विशेष रूप से चक्षुओं द्वारा की जाती है। नाटक में दृश्य बिंब चार रूपों में उपस्थित होते हैं- प्रकृति परक बिम्ब, मानवेतर प्राणियों से सम्बद्ध बिम्ब, मानव-जीवन से सम्बद्ध बिम्ब और भावों पर आधारित बिम्ब ।

आठवें दशक के हिन्दी नाटककारों में प्रकृति-परक बिम्बों का उपयोग अधिकतर पात्रों की मनःस्थिति स्पष्ट करने एवं वातावरण को प्रस्तुत करने के लिए किया है।मानवेतर प्राणियों से संबद्ध बिम्बों का प्रयोग प्रतीकात्मक अर्थो को स्पष्ट करने तथा मनुष्य के अंदर छिपी, पशु-प्रवृत्तियों को उजागर करने लिये किया गया है। मानवेतर प्राणियों में प्रायः कुत्ता, सर्प, गधा, भेड़िया, कौआ, गिद्ध आदि पशु-पक्षियों का उल्लेख हुआ है।कहीं-कहीं नरसिंह के प्रतीक के माध्यम से अर्ध-नर और अर्ध-आसुरी प्रवृत्तियों को भी व्यंजित किया गया है ।

मानव-जीवन से संबद्ध बिम्ब अधिकतर निम्न-मध्यमवर्गीय पात्रों से संबंधित समस्याओं, उनकी विवशताओं अथवा विसंगतियों को उभारते हैं। भावों पर आधारित बिम्ब करूणा, दया, घृणा, लज्जा जैसे मानवीय मनोभावों को प्रत्यक्ष करते हैं। इसके साथ ही पात्रों के अन्तर्द्वन्द्व को भी स्पष्ट करने में ये बिंब सहायता करते हैं। प्रेम-व्यापार की अभिव्यक्ति में ये विशेष रूप से प्रयुक्त हुए हैं।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

दृश्य बिम्बों के प्रयोग में डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, मुद्राराक्षस, बृजमोहन शाह, रमेश बक्षी, विनोद रस्तोगी, सुरेन्द्र वर्मा, हमीदुल्ला, सुशील कुमार सिंह, डॉ. सुरेश चन्द्र शुक्ल "चन्द्र" आदि नाटककार विशेष रूप से सिद्धहस्त हैं। इन नाटककारों ने दृश्य-बिम्बों के माध्यम से आधुनिकताबोध, सामाजिक विसंगतियों एवं विभिन्न स्तरों पर फैले भ्रष्टाचार को अभिव्यक्त किया है ।

श्रव्य बिंबों की उत्पत्ति नाद द्वारा होती है। वे ध्वनि प्रतीकों पर आधारित होते हैं। आठवें दशक के हिन्दी नाटकों में श्रव्य बिम्बों का प्रयोग दृश्य-चित्रों तथा ध्वनि-चित्रों को प्रस्तुत करने के लिए किया गया है। इनके उपादान कीर्तन-शैली के रूप में, नट-नटी की प्रस्तावना के रूप में, टेलीफोन की घंटी बजने के रूप में, मनःस्थिति व्यक्त करने के लिए, पाँवों की आहट अथवा दस्तक के रूप में, वातावरण की सृष्टि करने के लिए, ध्वनि प्रभाव उत्पन्न करने के लिए तथा उपमान के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। इसके अतिरिक्त कुछ नाटकों में श्रव्य बिम्बों का प्रयोग उद्घोषणा के रूप में कोरस-गायन के रूप में तथा आक्रोश एवं विसंगति को व्यक्त करने के लिए भी किया गया है। श्रव्य बिम्बों की विशेष प्रस्तुति भीष्म साहनी के "कबिरा खड़ा बाजार में", दयाप्रकाश सिन्हा के "कथा एक कंस की", मोहन राकेश के "लहरों के राजहंस" तथा शरद जोशी के "अन्धों का हाथी" नाटक में हुई है।

घ्रातव्य या घ्राण विषयी बिम्बों का प्रयोग सुगन्धिमय वातावरण की प्रस्तुति के लिए, दुर्गन्ध के चित्रण के लिए, दृष्टान्तों की प्रस्तुति के लिए, किसी व्यक्तित्व की ओर संकेत करने के लिए प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति के लिए तथा अमूर्त भावनाओं की सांकेतिक अभिव्यक्ति के लिए किया गया है। प्रमुख रूप से जली रोटी की गन्ध, इत्र की सुगन्ध, फलों की गन्ध, शराब की गन्ध, संडास की दुर्गन्ध, जले हुए टोस्ट की गन्ध, धुएँ की गन्ध, कपूर की गन्ध, शारीरिक विकार से उत्पन्न गन्ध, सिगरेट की गन्ध तथा मछली, जूते और बारूद आदि की गंध के बिम्ब

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

प्रस्तुत किए गए हैं। गन्ध-बिम्बो की प्रस्तुति डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के "चतुर्भज राक्षस", डॉ. शंकर शेष के "चेहरे", मुद्राराक्षस के "तेन्दुआ", सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के "बकरी" तथा ज्ञानदेव अग्निहोत्री के "नेफा की एक शाम" नाटकों में विशेष रूप से हुई है। वैसे अन्य ऐन्द्रिय बिम्बों की तुलना में घ्राण बिम्बों के प्रयोग कम किये गये हैं।

आठवें दशक के हिन्दी-नाटकों में आस्वाद बिम्बों का प्रयोग मानसिक स्थिति को व्यक्त करने, श्रोता अथवा दर्शकों के आस्वाद-व्यापार को जागृत करने, वातावरण को प्रस्तुत करने, व्यक्ति के अमानवीय आचरण को दर्शाने, प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति के लिए, गवासनात्मक एवं काम- चेष्टाओं की अभिव्यंजना के लिए तथा जुगुप्सा, ईर्ष्या, क्रोध आदि मनोभावों की अभिव्यक्ति के लिए किया गया है। आस्वाद बिम्बों की प्रस्तुति में विभिन्न व्यंजनों का उल्लेख, मद्यपान की क्रिया, मिष्ठान्नों की चर्चा, नाखून कुतरने की क्रिया, कामपूर्ति की चेष्टा, चिलम फूँकने, सिगरेट पीने अथवा हुक्का गुड़गुड़ाने की क्रिया आदि का भी उल्लेख हुआ है। स्पर्श्य बिम्ब में, स्पर्शजन्य संवेदनों के माध्यम से बिम्ब का निर्माण होता है। आठवें दशक के हिन्दी-नाटकों में स्पर्श्य बिम्बों का उपयोग प्रेम-वासना, आक्रोश, हिंसा तथा पात्रों की मानसिकता को दर्शाने के लिए किया गया है। इसके अतिरिक्त तुलनात्मक अभिव्यक्तितथा आस्वाद-व्यवहार के संदर्भ में भी स्पर्श बिम्बों का प्रयोग हुआ है।

पारम्परिक बिम्बों के निर्माण का आधार मन में उत्पन्न वासनाएँ होती है। पारम्परिक बिम्बों की अभिव्यक्ति आद्य-बिम्ब, स्वप्न-बिम्ब, पौराणिक - बिम्ब एवं ऐतिहासिक बिम्बों के रूप में हुई है। आठवें दशक के नाटकों में आद्य बिम्बों का विधान, मानव के अन्तर्मन में

निहित आस्थाओं, अन्धविश्वासों और प्राचीन परम्पराओं की अभिव्यक्ति के लिए किया गया है। कहीं-कहीं बिम्बों माध्यम से अप्रजातांत्रिक जीवन-प्रसंगों को भी उद्घाटित किया गया है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

आद्य बिम्बों की दृष्टि से जगदीशचन्द्र माथुर का "पहला राजा", लक्ष्मीनारायण लाल के "नरसिंह कथा" और "एक सत्य हरिश्चन्द्र" तथा डॉ० सुरेश चन्द्र शुक्ल "चन्द्र" के "कुत्ते" और "लड़ाई जारी है" विशेष उल्लेखनीय हैं।

स्वप्न-बिम्बों की प्रस्तुति आठवें दशक के नाटकों में अपेक्षाकृत अल्पमात्रा इसका कारण यथार्थवादी प्रवृत्ति का बढ़ना रहा है। डॉ. चन्द्र के "अक्षयवट" नाटक में हुई है,

स्वप्न-बिम्ब की निर्मिति महत्वपूर्ण है।

पौराणिक-बिम्ब, नाटकों में दो स्तरों पर प्रयुक्त हुए हैं-वैयक्तिक चेतना दर्शाने के लिए तथा सार्वभौमिक चेतना का अंकन करने के लिए। आठवें दशक के नाटकों में प्रयुक्त बिम्ब, इन दोनों प्रकार की चेतना के उन रहस्यमय और गूढ़ तत्वों को अभिव्यक्त करते हैं, जिन्हें साधारण काल्पनिक कथ्य में कहा जाना संभव नहीं होता। इसके अतिरिक्त ये बिम्ब प्रतीकात्मक अर्थ की अभिव्यक्ति भी करते हैं तथा दर्शक के मन में संवेदना भी जागृत करते

हैं।

आठवें दशक के युग में ऐतिहासिक नाटक बहुत कम लिखे गये हैं, लेकिन ऐतिहासिक बिम्बों के उदाहरण नाटकों में यत्रतत्र मिल जाते हैं। इनका उपयोग या तो

सांकेतिक रूप में पात्रों की मनःस्थिति दर्शाने के लिए किया गया है, या फिर व्यंग्यात्मक रूप में किसी पात्र की चारित्रिक विसंगति को उभारने के लिए।

आठवें दशक के नाटकों में व्यक्त विविध पारम्परिक बिम्ब एक ओर जहाँ बदलती हुई सामाजिक संरचना की ओर संकेत करते हैं, वहीं इनमें कुछ नई सामाजिक परम्पराओं की भी अनुगूँज सुनाई देती है, जो वर्तमान समाज में विकसित हो रही है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

नाटकों की भाषा वस्तुतः काव्यभाषा होती है, लेकिन यह व्यावहारिक भाषा से जुड़ी होती है। वह अभिव्यक्ति केन्द्रित विविध प्रकार के बिम्बों के माध्यम से शब्दों एवं संवादों को नई अर्थवत्ता प्रदान करती है। नाटकों में कथ्य की अभिव्यक्ति मंचसज्जा, वेशभूषा, अभिनय, भाषा, अलंकार और लोकोक्तियों एवं मुहावरों के माध्यम से की जाती है और बिम्ब इन्हीं उपादानों के माध्यम से स्वरूप ग्रहण करते हैं।

आठवें दशक के हिन्दी नाटकों में मंच एवं वेशभूषा से संबंधित अधिकांश बिम्ब यथार्थवादी जीवन के दृश्य प्रस्तुत करते हैं तथा वातावरण को सघनता के साथ व्यक्त

करते हैं। इधर के नाटकों में अभिनय आधारित बिम्बों का बहुलता से प्रयोग किया गया है और इनके द्वारा पात्रों की मनःस्थिति तथा उनके पारस्परिक संबंधों को जीवन्तता प्रदान की गई है।

नाटक में भाषापरक बिम्बों के प्रयोग तीन रूपों में मिलते हैं-भाषा के विचलन पर आधारित बिम्ब, व्यंजनापरक बिम्ब और प्रतीकात्मकता से सम्पन्न बिम्ब । इन बिम्बों से अर्थ की व्यापक अभिव्यंजना हुई है तथा पात्रों की मनःस्थिति व्यक्त करने के साथ-साथ ये बिम्ब

कथावस्तु को आगे बढ़ाने में भी सहायक हुए हैं। अलंकार आश्रित बिम्बों का प्रयोग कथ्य को दृश्यत्व प्रदान करने के लिए किया गया है। अधिकांश अलंकार बिम्ब उपमा, रूपक और मानवीकरण पर आधारित हैं। कहावतों तथा मुहावरों पर आश्रित बिम्बों का संश्लिष्ट या निबद्ध बिम्बों के अंतर्गत वे बिम्ब आते हैं, जिनमें अनेक बिम्ब परस्पर संबद्ध रहते हैं। आठवे दशक के नाटकों में संश्लिष्ट बिम्बों का प्रयोग या तो पात्रों की जटिल मनःस्थिति को

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

व्यक्त करने के लिए हुआ है या फिर वातावरण एवं परिवेश को अधिक स्पष्टता के साथ उजागर करने के लिए। इस दृष्टि से सुभाष पन्त के "चिड़िया की आँख" और असगर

वजाहत के "वीरगति' नाटक विशेष रूप से दृष्टव्य हैं।इसके साथ ही सामाजिक विसंगतियों को प्रकट करने, जीवन के अनुभवों का निचोड़ प्रस्तुत करने तथा भाषा को नई अर्थवत्ता प्रदान करने में भी संश्लिष्ट बिम्ब सहायक हुए हैं।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के "बकरी", लक्ष्मीनारायण लाल के "व्यक्तिगत" और मनहर चौहान के "हेराफेरी" नाटक में संश्लिष्ट बिम्बों का उपयोग पारिवारिक एवं सामाजिक संबंधों की अभिव्यक्ति के लिए तथा मानव-जीवन की विभिषिकाओं और विसंगतियों का

चित्रण करने के लिए किया गया है।

गोविंद चातक के "अपने-अपने खूँटे", संतोष नारायण नौटियाल के "एक मशीन जवानी की" और डॉ. अज्ञात के "मैं नारी तुम पुरूष' नाटक के संश्लिष्ट बिम्ब कहीं तो पूँजीवादी व्यवस्था की विसंगतियों का चित्रण करते और कहीं मनुष्य की परिवर्तनकारी चेतना को रेखांकित करते हैं।

संश्लिष्ट बिम्ब अधिकतर मुहावरापरक एवं अलंकारपरक बिम्बों पर आधारित हैं। लोकोक्तिपरक एवं पौराणिक तथा ऐतिहासिक बिम्बों का संश्लेषण बहुत कम किया गया है। मंचपरक, श्रव्य, गंध एवं अभिनयपरक प्रयोग विशेष कर सामाजिक विसंगतियों का चित्रण करने तथा पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को व्यक्त करने के लिए किया गया है। बिम्बों के संश्लेषण भी प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। इस संदर्भ में मणि मधुकर के "खेला पोलमपुर" और भीष्म साहनी के "हानुश" तथा "कबिरा खड़ा बाजार में" नाटक उल्लेख्य हैं। स्वप्न-बिम्ब, अलंकार बिम्ब और भाषापरक बिम्बों के संश्लिष्ट प्रयोग डॉ. सुरेश चन्द्र शुक्ल "चन्द्र" के

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

"लड़ाई जारी है", "कुत्ते", "आकाश झुक गया" और "अक्षयवट" नाटक में देखे जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल प्रकृतिपरक, भावपरक तथा भाषापरक बिम्बों के संश्लिष्ट रूप प्रस्तुत करने में सफल रहे हैं।

आठवें दशक के नाटकों में संश्लिष्ट बिम्बों का प्रयोग बढ़ता हुआ दृष्टिगोचर हो रहा है, क्योंकि औद्योगिकीकरण और महानगरीकरण के कारण मध्यवर्ग का जीवन अधिक

जटिल हो गया है। अंदर-बाहर विभिन्न परिस्थितियों से जूझते हुए पात्रों की मनःस्थिति की प्रस्तुति संश्लिष्ट बिम्बों के द्वारा अधिक सार्थकता के साथ संभव है।

आठवें दशक के हिन्दी नाटकों के प्रयुक्त अधिकतर बिम्ब मध्यवर्गीय जीवन से संबंधित है। उच्च वर्ग एवं निम्नवर्ग से संबंधित बिम्बों की संख्या कम है। इसके साथ ही मुख्यतः बिम्बों का संबंध नगरीय जीवन से है। ग्रामीण जीवन से संबंधित बिम्ब अत्यंत अल्प मात्रा में हैं। इसका कारण यह है कि हिन्दी में ग्रामीण परिवेश पर बहुत कम नाटक लिखे गये हैं। इसके अतिरिक्त अधिकांश बिम्ब या तो प्रतीकात्मक अभिव्यंजना के रूप में हैं या फिर वातावरण की प्रस्तुति के रूप में। तत्वचिंतन को प्रस्तुत करने वाले विचारपरक बिम्ब बहुत कम है।

आठवें दशक के हिन्दी-नाटकों में बिम्बों का प्रयोग विविध सन्दर्भों एवं प्रसंगों में, जीवनानुभवों की अभिव्यक्ति के लिए किया गया है। वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन के सभी आयाम बिम्बों के माध्यम से मुखरित हुए हैं। शिल्प की दृष्टि से आठवें दशक के नाटकों

का बिम्ब-विधान, नाटक के कथ्य को अधिक मूर्त तथा अभिव्यंजना को अधिक प्रभावशाली बनाता है। बिम्बों का संयोजन, मंचीय सीमाओं और जन-रूचि के परिपेक्ष्य में हुआ है। इससे शिल्प, भाषा और चिंतन के स्तर पर अनेक नये आयाम उद्घाटित हुए हैं।

संदर्भ :

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

1.अज्ञात, मैं नारी तुम पुरूष, नाट्य शोध संस्थान विधान नगर, कोलकाता.

2. अग्निहोत्री, ज्ञानदेव, नेफा की एक शाम, विकास पब्लिशिंग प्रा.लि., नई दिल्ली. 1969.

3. चातक गोविन्द, अपने-अपने खूँटे, हिन्दी बुक सेंटर, नई दिल्ली, 1977.

4. चौहान मनहर, हेराफेरी, राजपाल एंड संस, नई-दिल्ली

5. जोशी शरद, अंधों का हाथी, राजकमल प्रकाशन, नई-दिल्ली, पहला पेपरबेक संस्करण, 1993.

6. मधुकर मणि, खेला पोलमपुर, नाट्य शोध संस्थान, कोलकाता, 1979.

7.माथुर जगदीश चन्द्र, पहला राजा, राजकमल प्रकाशन, नई-दिल्ली 1969.

8. राकेश मोहन, लहरो के राजहंस, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1963.

9. लाल डॉ. लक्ष्मीनारायण, एक सत्य हरिश्चन्द्र, राजपाल एंड संस, नई दिल्ली. 1977

10. लाल डॉ. लक्ष्मीनारायण, नरसिंह कथा, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1975.

11. लाल डॉ. लक्ष्मीनारायण, चतुर्भुज राक्षस, मिश्रा ब्रदर्श, पुरानी मण्डी, अजमेर, 1976,

12.वजाहत असगर, वीरगति, नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, नटरंग प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, 1984.

13. सक्सेना सर्वेश्वरदयाल, बकरी, लिपि प्रकाशन, नई-दिल्ली, 1974.

14. सिन्हा दयाप्रकाश, कथा एक कंस की, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1976.

15. शाहनी भीष्म, हानूश, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1977.

16. शाहनी भीष्म, कबीरा खड़ा बाजार में, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1981.

17. शुक्ल 'चन्द्र' डॉ. सुरेश चन्द्र, कुत्ते, रचना प्रकाशन, इलाहाबाद, 1979.

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

18. शुक्ल 'चन्द्र' डॉ. सुरेश चन्द्र, आकाश झुक गया, हिन्दी बुक सेंटर, नई दिल्ली, संस्करण - 2002, प्रकाशन, 1977.

19. शुक्ल 'चन्द्र' डॉ. सुरेश चन्द्र, अक्षय वट, प्रकाशन संस्थान, नई-दिल्ली, 1983

20. शुक्ल 'चन्द्र' डॉ. सुरेश चन्द्र, लड़ाई जारी है, शांति प्रकाशन, इलाहाबाद, 1985

21. ओझा डॉ. दशरथ, आज का हिन्दी नाटक : प्रगति और प्रभाव, बंसल एंड कम्पनी

22 सक्सेना सर्वेश्वरदयाल, बकरी, लिपि प्रकाशन, नई-दिल्ली, 1974.

23. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपर बेक्स, नोएडा, प्रथम संस्करण, 1973.

24. सिंह डॉ. केदारनाथ, आधुनिक हिन्दी-कविता में बिम्ब विधान का विकास, विकास1994 पब्लिशिंग हाऊस प्रा.लि. नोएडा, उत्तरप्रदेश, 1994.

25 शुक्ल 'चन्द्र' डॉ. सुरेश चन्द्र एवं नीलम मसंद, हिन्दी नाटक और नाटककार, 76साहित्य रत्नालय, 1985.

26 नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपर बेक्स, नोएडा, प्रथम संस्करण, 1973

27 नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपर बेक्स, नोएडा, प्रथम संस्करण, 1973

28. सिंह डॉ. बच्चन, हिन्दी नाटक, लोक भारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद, नवीन संस्करण 2010.

29. शर्मा राजनाथ, हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा.

30 शुक्ल डॉ. देवेन्द्र, साठोत्तर, हिन्दी नाटकों के बिम्ब विधान का अनुशीलन, विकास प्रकाशन, कानपुर, 2011.

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

31. शुक्ल 'चन्द्र' डॉ. सुरेश चन्द्र एवं नीलम मसंद, हिन्दी नाटक और नाटककार, साहित्य रत्नालय, 1985.